

डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, यशायाह के सेवक गीत, सत्र 1: प्रभु का सेवक: न्याय का चैंपियन और वाचा मध्यस्थ (ए), (यशायाह 42:1-9)

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म यशायाह के सेवक गीतों पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 1 है, प्रभु का सेवक, न्याय का समर्थक और वाचा का मध्यस्थ, भाग अ, यशायाह 42 :1-9।

यशायाह के सेवक गीतों के हमारे अध्ययन में आपका स्वागत है। हम इन गीतों पर चार व्याख्यान देंगे।

यशायाह की पुस्तक को अक्सर बहुत मसीहाई कहा जाता है। यशायाह में मसीहाई विषयों पर बहुत से लेख हैं। हम यशायाह 7:14 और कई अन्य, और तथाकथित सेवक गीतों के बारे में सोचते हैं, जो यशायाह 42, 49, 50, और फिर 52, 53 में आते हैं, मेरे दृष्टिकोण से निश्चित रूप से मसीहाई विषय पर आधारित हैं।

लेकिन इन गीतों में गहराई से उतरने से पहले, हम इन्हें उनके संदर्भ से अलग करके उनमें गहराई से नहीं उतर सकते। हमें खुद को इस बात से परिचित कराना होगा कि यशायाह के इस भाग में क्या हो रहा है, और खास तौर पर पहला गीत अपने संदर्भ में कैसे फिट बैठता है, क्योंकि यही बाकी गीतों को समझने की नींव रखता है। और इसलिए पहले दो गीतों में, हम देखेंगे कि सेवक न्याय का समर्थक और वाचा का मध्यस्थ है।

लेकिन उससे पहले, आइए यशायाह 40 से 66 के बारे में बात करते हैं। आपने शायद सुना होगा कि अध्याय 1 से 39 तक भविष्यवक्ता यशायाह से संबंधित हैं, जो लगभग 700 ईसा पूर्व और उससे भी पहले के वर्षों में हुए थे, और फिर अध्याय 40 से 66 भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा नहीं, बल्कि एक तथाकथित ऊ्यूटेरो -यशायाह द्वारा लिखे गए हैं। दरअसल, बर्नार्ड डूम नाम के एक विद्वान ने आकर कहा था, " नहीं , यशायाह तीन थे।"

मूल यशायाह है, दूसरा यशायाह, ऊ्यूटेरो -यशायाह, जिसने 40 से 55 तक लिखा, और फिर ट्रिटो, या तीसरा यशायाह, जिसने 56 से 66 तक लिखा। तो 1 से 39 तक, अधिकांशतः, निर्वासन-पूर्व काल से आते हैं जब यशायाह जीवित थे, हालाँकि, अगर आप इसे ध्यान से देखें, तो उच्च आलोचनात्मक सहमति में अध्याय 1 से 39 के कई, कई हिस्सों को बाद के लेखकों द्वारा जिम्मेदार ठहराया गया है। वे यह नहीं मानते कि यशायाह ने यह सब लिखा था।

और फिर 40 से 55 तक निर्वासन के समय से आते हैं, और फिर 56 से 66 तक, कुछ लोग, जो तीसरे यशायाह में विश्वास करते हैं, कहेंगे कि वास्तव में वह सामग्री निर्वासन के बाद की है और उस काल से आती है जब कुछ लोग स्वदेश लौट गए थे, कुछ अभी भी निर्वासन में थे। खैर, मेरा मानना है कि आठवीं शताब्दी के भविष्यवक्ता यशायाह ने पूरी पुस्तक लिखी थी। यह एक अल्पमत का मत है।

मैं यहाँ-वहाँ प्रेरणाप्रद अंशों के लिए छूट देता हूँ, लेकिन उस व्यापक पैमाने पर नहीं जैसा कुछ लोग करते हैं। और इसलिए, आज का हमारा विषय यह नहीं है, और मैं इस पर ज़्यादा विस्तार से बात नहीं करना चाहता, लेकिन यशायाह 40 से 66 के बारे में मेरी समझ यह है कि यशायाह ने निर्वासन की भविष्यवाणी की थी। अगर आप अध्याय 36 से 39 तक देखें, तो हमें अध्याय 36 और 37 में असीरियाई संकट मिलता है, जहाँ प्रभु चमत्कारिक रूप से यरूशलेम को उसकी दीवारों के बाहर खड़ी असीरियाई सेना से बचाते हैं, और अध्याय 39 में, याद कीजिए कि बेबीलोन के लोग आते हैं और वे हिजकिय्याह से मिलने जाते हैं, जो एक बीमारी से ठीक हो गया है।

उसे प्रभु से जीवन का एक नया पट्टा मिला है। प्रभु ने उसे बताया था कि वह मरने वाला है, लेकिन बदले में उसे अपना जीवन बढ़ा दिया गया, और यहूदा के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उन्हें जीवन का एक नया पट्टा मिला है।

प्रभु ने उन्हें अश्शूरियों से बचा लिया है, लेकिन हिजकिय्याह बेबीलोनियों और कसदियों के सामने रो रहा है, उनके साथ भोजन कर रहा है, और अपनी संपत्ति का दिखावा कर रहा है, और भविष्यवक्ता उसके पास आकर कहता है, "तुम क्या कर रहे हो? तुम एक आम राजा की तरह व्यवहार कर रहे हो। क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि एक दिन ऐसा आएगा जब ये बेबीलोनवासी इस शहर को तबाह कर देंगे, और वे ये सारी चीज़ें जो तुम उन्हें दिखा रहे हो, ले जाएँगे। और इसलिए, उस समय निर्वासन की भविष्यवाणी की गई है, और इसलिए मुझे लगता है कि प्रभु यशायाह के साथ जो करते हैं, वह भविष्यवक्ता के मन में काम करता है, और यह बहुत ही अलंकारिक है, और वह जो करता है, वह खुद को भविष्य में प्रक्षेपित करता है, और वह आने वाली पीढ़ी से, जो निर्वासन में जाने वाली है, ऐसे बात करता है जैसे वह वहाँ मौजूद हो।"

और कुछ विद्वान तर्क देंगे कि अध्याय 40 से 55 में अभी भी 8वीं शताब्दी की पृष्ठभूमि के संकेत और संकेत मौजूद हैं, लेकिन अधिकांशतः, मुझे लगता है कि 40 से 55 में, यह धारणा है कि निर्वासन पहले ही हो चुका है, और जो वादा किया जा रहा है वह निर्वासन से मुक्ति है, जबकि 1 से 39 में, निर्वासन अभी तक नहीं हुआ है। इसकी भविष्यवाणी की जा रही है। यह घटित नहीं हुआ है, लेकिन यदि आप इसे 40 से 55 तक और 56 से 66 तक बढ़ाते हैं, तो यह पहले ही हो चुका है, और इसलिए आप समझ सकते हैं कि वे क्यों प्रस्तावित करते हैं कि एक प्रेरित, अनाम भविष्यवक्ता था जिसने यशायाह की भावना में लिखा, जिसने यह सामग्री जोड़ी।

विपक्ष के तर्कों में नहीं पड़ेंगे, इसलिए मैं यशायाह की बात का ज़िक्र करूँगा, क्योंकि मुझे लगता है यशायाह इस आने वाली पीढ़ी से बात कर रहे हैं। यह ऐसा है जैसे कोई दादा अपनी छोटी पोती को पत्र लिख रहा हो। वह बहुत बूढ़ा है, और उसे पता है कि जब वह बड़ी होगी और उसकी शादी होगी, तो वह उसके साथ नहीं रहेगा।

वह बस इतना आगे नहीं बढ़ पाएगा, और इसलिए वह आपकी शादी के दिन खोले जाने के लिए एक पत्र लिखता है, जो हर तरह की बुद्धिमत्ता से भरा होता है, क्योंकि उसने जीवन जिया है, और वह जानता है कि वह किस तरह की समस्याओं का सामना कर रही होगी। मैं यशायाह में कुछ ऐसा ही देखता हूँ, इसलिए मेरा भी यही सामान्य दृष्टिकोण है, लेकिन मुझे लगता है कि हमें तत्काल संदर्भ को देखने की ज़रूरत है। पहला सेवक गीत, जिसे सेवक गीत कहा जाता है,

अध्याय 42, पद 1 से 9 में है। हमें उस संदर्भ को देखने की ज़रूरत है जो इसे आगे ले जाता है, और हम इस पर बहुत विस्तार से नहीं जा रहे हैं, लेकिन अध्याय 40 में, एक बहुत प्रसिद्ध पद है, क्योंकि यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई पर लागू होता है, और प्रभु घोषणा करते हैं, मेरे लोगों को शान्ति दो, शान्ति दो।

प्रभु सात्वना का संदेश लेकर आते हैं, और यशायाह का यह भाग बहुत सकारात्मक है। इसमें उद्धार की बहुत सारी घोषणाएँ, भविष्यवाणियाँ और एक बहुत ही सकारात्मक भाग है, इसलिए यह सात्वना का समय है, क्योंकि शहर को बहुत कष्ट हुआ है। बेबीलोनियों ने शहर को नष्ट कर दिया था।

लोग निर्वासन में चले गए, और सिथ्योन को एक स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है, और उसके सभी बच्चे उसे छोड़कर चले गए हैं, लेकिन वे वापस आएंगे, और इसलिए अध्याय 40, पद 1 से 11 में संदेश है कि उन्हें प्रभु की वापसी के लिए मार्ग तैयार करना होगा, और यह केवल रूपक नहीं है, उनके लिए एक सुंदर राजमार्ग या ऐसा ही कुछ बनाना होगा, जैसा कि प्राचीन निकट पूर्व में कभी-कभी राजाओं के लिए किया जाता था। यह एक नैतिक तैयारी है, और इसीलिए इसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई पर लागू किया जा सकता है, क्योंकि दुर्भाग्य से, लोग वापस नहीं आए थे। यहां तक कि सैकड़ों साल बाद, यूहन्ना के समय तक भी, वे वास्तव में प्रभु के पास वापस नहीं आए थे और न ही स्वयं को नैतिक रूप से उस राज्य के लिए तैयार किया था जो प्रभु उन्हें दे रहे थे, और इसलिए उनका संदेश सात्वना देने का था, प्रभु के लौटने का मार्ग तैयार करने का था, और फिर यशायाह 40 के पद 12 से 31 में, भविष्यवक्ता समझाते हैं, और प्रभु उस भाग में से कुछ में बोल रहे हैं, प्रभु यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि वे समझें कि उन्होंने उन्हें त्यागा नहीं है, क्योंकि वे निर्वासन में हैं, और इसलिए वे सोच रहे होंगे, ठीक है, परमेश्वर ने हमें छोड़ दिया है, और प्रभु यह स्पष्ट करते हैं, नहीं, मैंने नहीं छोड़ा है।

मैं कुलपिताओं से किए अपने वादों को पूरा करना चाहता हूँ, और मैं उस ज़मीन को फिर से बसाने जा रहा हूँ, और जैसे-जैसे भाग 40 से 55 आगे बढ़ता है, आपको एहसास होता है कि उन्हें अपने निर्वासन के कारण को समझना होगा, जो कि उनके पाप के कारण है, और उन्हें पश्चाताप करने की ज़रूरत है, लेकिन प्रभु यह स्पष्ट करते हैं कि बेबीलोनवासी मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली नहीं हैं, और उनके देवता, मर्दुक, उनके संरक्षक देवता, मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली नहीं हैं। तुम अपने पाप के कारण निर्वासन में हो, लेकिन मैं तुम्हें वापस लाना चाहता हूँ, और मैं तुम्हें वापस लाने का इरादा रखता हूँ, और मैं अभी भी यहाँ हूँ। मैं समय की सीमा में नहीं हूँ।

मैं बेबीलोन में हूँ। मैं अंतरिक्ष से सीमित नहीं हूँ। मैं मरा नहीं हूँ।

मैं कमज़ोर नहीं हूँ। मैं तुम्हें छुड़ा सकता हूँ, और यही अध्याय 40 का संदेश है। फिर अध्याय 41 में, प्रभु उन साधनों में से एक के बारे में बात करना शुरू करते हैं जिनका उपयोग वह लोगों को बेबीलोन की गुलामी से छुड़ाने के लिए करने वाले हैं, और आपको इतिहास में याद होगा कि यरूशलेम का पतन 586 में हुआ था।

दरअसल, इससे पहले बेबीलोन के तीन आक्रमण हुए थे, लेकिन 586 में लोगों को निर्वासित कर दिया गया। उसके कुछ ही समय बाद, 540 में, फ़ारसी राजा साइरस, जिसका नाम इस भाग में दिया गया है, आया। यही एक कारण है कि कुछ लोग इसे बाद की तारीख में रखना चाहते हैं। उसे हिब्रू में कोरेश कहा जाता है।

यही उसका नाम है, लेकिन उसका ज़िक्र अध्याय 44 और 45 में है। प्रभु फारसी कुसू को खड़ा करने वाले हैं, और वह बेबीलोन पर विजय प्राप्त करने वाला है, और उसने ऐसा किया। उसने ऐसा किया, और कुसू बहुत दयालु था, और उसने यहूदा से निर्वासितों को उनके देश लौटने की अनुमति देने का फैसला किया, और इसलिए वह मुक्ति का एक माध्यम है।

प्रभु अपने लोगों को वापस उनके देश ले जाएँगे, लेकिन निश्चित रूप से, पुनर्स्थापना का एक नैतिक और धार्मिक पहलू भी है, लेकिन 41 में भी, पूर्व से इस व्यक्ति को कौन उभारता है? उसे आधिकारिक तौर पर सेवा के लिए कौन नियुक्त करता है? वह राष्ट्रों को उसके हाथों में सौंपता है और उसे राजाओं को वश में करने में सक्षम बनाता है। वह अपनी तलवार से उन्हें धूल के समान, अपने धनुष से हवा से उड़ते हुए तिनके के समान बना देता है। वह उनका पीछा करता है और बिना किसी नुकसान के आगे निकल जाता है।

वह बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ता है। यह एक योद्धा राजा, राजा कुसू है, और प्रभु उसका इस्तेमाल बाबुल को हराने और लोगों को वापस जाने देने के लिए करने वाले हैं। तो इस भाग में शुरुआत में ही इसका परिचय दिया गया है, और उसके ठीक बाद पद 8 से 20 में, प्रभु अपने लोगों, अपने निर्वासित लोगों को प्रोत्साहित करते हैं, और जब वे इस भाग में अपने निर्वासित लोगों को संबोधित करते हैं, तो वे उन्हें इस्राएल और याकूब कहते हैं।

इसलिए वह कहता है, "हे मेरे सेवक इस्राएल, हे याकूब, हे मेरे चुने हुए इस्राएल।" तो यह बिल्कुल स्पष्ट है कि प्रभु का सेवक इस्राएल राष्ट्र है, लेकिन समस्या यह है कि इस्राएल राष्ट्र ने प्रभु को त्याग दिया है, और प्रभु उन्हें अंधा और बहरा कहने वाले हैं, और वे निर्वासन में हैं, और उन्हें मुक्ति की आवश्यकता है। इसलिए यह याद रखना और इसे ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि जब हम अध्याय 42 में सेवक की पहचान के बारे में बात करते हैं, तो हमें यह समझना होगा कि इस्राएल की पहचान सेवक के रूप में की गई है।

इसलिए कुछ लोग तर्क देंगे कि आपको इस खंड में प्रभु के सेवक को हमेशा इस्राएल ही समझना होगा, और मेरे विचार से उनका तात्पर्य निर्वासित याकूब इस्राएल से है। नहीं, यहाँ दो अलग-अलग सेवक कार्यरत हैं, और मैं आगे बढ़ते हुए इसे सिद्ध करने का प्रयास करूँगा। फिर अध्याय 41 पद 21 में, प्रभु फिर से इस मुक्ति के साधन के बारे में बात करते हैं, और मैंने उत्तर दिशा से एक को उभारा है।

पहले ये पूर्व दिशा थी, और अब ये उत्तर दिशा है। खैर, अगर आप समझते हैं कि फ़ारसी कैसे आते थे, तो ये पूर्व और उत्तर दोनों दिशाएँ हो सकती हैं। तो मैंने उत्तर दिशा से एक को जगाया, और वो आगे बढ़ा, पूर्वी क्षितिज से एक, जो मेरे नाम से प्रार्थना करता है।

वह शासकों पर ऐसे पैर रखता है मानो वे मिट्टी हों, जैसे कोई कुम्हार मिट्टी को रौंद रहा हो, और फिर प्रभु समझाते हैं कि मैंने इसकी शुरुआत से ही घोषणा कर दी थी। इस खंड का एक विषय यह है कि प्रभु कहते हैं, मैं दूर के भविष्य की घटनाओं की घोषणा कर सकता हूँ, और मुझे लगता है कि इसीलिए यह भविष्यवक्ता यशायाह है, क्योंकि अगर आप कहते हैं, नहीं, यह कोई बाद में लिखने वाला व्यक्ति है जो इस दौर से गुज़र रहा है, तो यह पूरी दलील को कमज़ोर कर देता है। मैंने कहा था कि मैं इस पर ज़्यादा विस्तार से नहीं जाऊँगा, लेकिन यह यशायाह के पारंपरिक दृष्टिकोण के पक्ष में एक प्रमुख तर्क है।

तो अब हम पहले सेवक गीत पर आते हैं, जिसे हम विस्तार से पढ़ेंगे और विभिन्न विषयों पर चर्चा करेंगे। हम दिखाएँगे कि यह नए नियम में कैसे पूरा होता है। वास्तव में ऐसे कई अंश हैं जो इस विशेष अंश का उद्धरण देते हैं या इसकी ओर संकेत करते हैं, लेकिन मैं एक झलक ज़रूर देना चाहता हूँ कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।

इससे पहले कि हम पेड़ों में खो जाएँ, मैं जंगल की बड़ी तस्वीर देखना चाहता हूँ। यशायाह अध्याय 42 में सेवक कौन है? क्योंकि इसकी शुरुआत इस तरह होती है, "यह मेरा सेवक है जिसका मैं समर्थन करता हूँ, मेरा चुना हुआ जिससे मैं प्रसन्न हूँ।" मैंने उस पर अपनी आत्मा रखी है, और फिर वह सेवक की सेवकाई का वर्णन करना शुरू करता है, और कुछ लोग कहेंगे कि यहाँ बहुत सारी भाषा है, और है भी, जो उस अंश से मेल खाती है जो हमने अध्याय 41 में देखा था, जहाँ सेवक चुना गया है, वह याकूब इस्राएल है, और वास्तव में कुछ लोग, मुझे लगता है कि LXX, यानी सेप्टुआजेंट, वास्तव में यहाँ याकूब इस्राएल को ही रखता है।

उन्होंने इसकी इसी तरह व्याख्या की है, और मैं समझ सकता हूँ कि उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा। इसमें एक समानता है, और इसलिए आप शायद कहें कि वह निर्वासित लोगों से बात कर रहा है, लेकिन जब आप पाठ को ध्यान से पढ़ेंगे, और इसे दूसरे सेवक गीत से जोड़ेंगे, तो आपको पता चलेगा कि ऐसा नहीं है। लेकिन अगर हम केवल अनुमानात्मक रूप से काम कर रहे हैं, और हम इस खंड पर आते हैं, और हम उस सेवक के बारे में पढ़ते हैं जो प्रभु का उद्धारक बनने वाला है, तो हम सोच सकते हैं कि यह कुसू है।

यह वही फ़ारसी राजा है जिसका नाम अभी तक तय नहीं हुआ है। वह अध्याय 44 और 45 में होगा, लेकिन अभी तक उसका नाम तय नहीं हुआ है। वह बस पूर्व से आया है, उत्तर से आया है, और वह एक विजयी राजा है।

तो शायद वही यहाँ नज़र आ रहा है, लेकिन इस गीत के शुरुआती छंदों में हमें जल्दी ही पता चल जाता है कि यह सेवक कोई विजयी राजा नहीं है, और इस गीत में उसे उस तरह से चित्रित भी नहीं किया गया है। वह नम्र है, और वह लोगों को कुचलने वाला नहीं है, इसलिए वह किसी विजयी राजा जैसा नहीं दिखता। और फिर जब हम दूसरे सेवक गीत पर आगे बढ़ते हैं, जो अध्याय 49 में है, तो बात और भी पुष्टा हो जाती है, जहाँ प्रभु सेवक की पहचान करते हैं, और दोनों गीतों की भाषा काफ़ी हद तक एक-दूसरे से मिलती-जुलती है।

और दूसरे गीत में, प्रभु उसे इस्राएल के रूप में पहचानते हैं। इस्राएल। तो सेवक का इस्राएल।

यह कुसू नहीं है। तो क्या इसका मतलब यह है कि यह निर्वासित इस्राएल है, याकूब? नहीं, नहीं, नहीं, क्योंकि अध्याय 42 में इस पहले सेवक गीत के ठीक बाद, प्रभु इस निर्वासित सेवक के बारे में बात करते हैं, जिसे वे याकूब इस्राएल कहते हैं, और वह सेवक अंधा है। उसने प्रभु का अनुसरण नहीं किया है।

उसने प्रभु को अस्वीकार कर दिया है। वह निर्वासन में है। उसे अपने पापों की सज़ा मिली है, और सेवक गीतों में सेवक के साथ ऐसा नहीं है।

और निर्णायक बात फिर से दूसरे गीत में है, क्योंकि दूसरे गीत 49 के श्लोक 5 और 6 में, सेवक को इस्राएल कहने के बाद, इस्राएल याकूब नहीं, वैसे, इस्राएल, इन अध्यायों में जब भी निर्वासित सेवक का ज़िक्र होता है, तो वह हमेशा याकूब इस्राएल ही होता है, और उसे बस इस्राएल ही कहा जाता है। और फिर अंदाज़ा लगाइए कि 5 और 6 में उसका एक मुख्य काम क्या है? इस्राएल को सौंपना। वाह, वाह, हमने इस्राएल को इस्राएल याकूब को सौंपते हुए दिखाया है, और इस्राएल याकूब ही रिहा होता है।

तो अरे, इस्राएल, इस्राएल याकूब को कैसे छुड़ा सकता है? और आपको यह देखना चाहिए कि लोग उन आयतों के व्याकरण के वाक्य-विन्यास के साथ क्या-क्या करेंगे ताकि इस समस्या का समाधान निकाला जा सके। सबसे आसान समाधान जॉन ओसवाल्ट के अनुसार चलना है, जो कहते हैं कि वहाँ इस्राएल को एक कार्य के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। यह पहचान की बात नहीं है।

और इसलिए हमारे पास एक आदर्श इस्राएल है जो इस्राएल के लिए परमेश्वर के आदर्श के अनुरूप कार्य कर रहा है, क्योंकि परमेश्वर इस्राएल के माध्यम से राष्ट्रों पर प्रभाव डालना चाहता था, और वे असफल रहे। उन्होंने वाचा का पालन नहीं किया। उन्होंने राष्ट्रों पर सकारात्मक प्रभाव नहीं डाला, और इसलिए वे निर्वासन में चले गए।

और इसलिए, आदर्श इस्राएल आएगा और निर्वासित पापी याकूब इस्राएल को छुड़ाएगा। मैं इसी विषय पर बात कर रहा हूँ, और इसलिए मैं पूरी तस्वीर सामने लाना चाहता था, और जैसे-जैसे हम प्रत्येक गीत को पढ़ेंगे, हम इन तर्कों को थोड़ा और विस्तार से स्थापित करेंगे। तो मुझे लगता है कि अब हम पहले सेवक गीत में उतरने के लिए तैयार हैं, और मैं इसे पूरा पढ़ूँगा, और जैसे-जैसे मैं इसे पढ़ूँगा, हम सेवक की सेवकाई और उसके द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाओं के बारे में बात करेंगे।

इसलिए प्रभु कहते हैं, "यह मेरा सेवक है, जिसे मैं सम्भालता हूँ, मेरा चुना हुआ, जिससे मैं प्रसन्न हूँ। मैंने अपनी आत्मा उस पर रखी है।" एक झलक देने के लिए, यह बात वास्तव में तब लागू होगी जब यीशु के बपतिस्मा के समय आत्मा उन पर उतरेगी, और यह अंश भजन संहिता 2 के साथ उद्धृत किया गया है, लेकिन इस पर बाद में और विस्तार से चर्चा की जाएगी।

राष्ट्रों के लिए न्यायपूर्ण आदेश जारी करेगा। दूसरे शब्दों में, उसका काम न्याय का रक्षक बनना होगा। वह राष्ट्रों को न्याय दिलाएगा, क्योंकि वे निश्चित रूप से अन्याय और उत्पीड़न से भरे हुए हैं, और उसका काम राष्ट्रों को न्याय दिलाना है।

वह न चीखेगा, न चिल्लाएगा। वह सड़कों पर अपनी शान नहीं बघारेगा। वह कुचले हुए सरकंडे को भी नहीं तोड़ेगा।

वह एक बुझी हुई बाती को नहीं बुझाएगा। यशायाह 43 में, बुझी हुई बाती का यह विचार मृत्यु का एक रूपक है। यह बुझी हुई बाती नहीं है; यह एक बुझी हुई बाती है, लेकिन वह उन लोगों की बात कर रहा है जो लगभग अंतिम चरण में हैं।

वे अंधकार में डूब रहे हैं, वे ज़रूरतमंद हैं, वे गरीब हैं, और उन्हें मदद की ज़रूरत है, और वह आकर इन लोगों को कुचलने वाला नहीं है। वह उनकी सेवा करेगा। वह उन्हें नहीं बुझाएगा।

वह ईमानदारी से न्यायपूर्ण आदेश देगा जिससे सभी राष्ट्रों के लोगों को लाभ होगा। पृथ्वी पर न्याय स्थापित करने से पहले वह न तो निराश होगा और न ही निराश होगा। समुद्रतट के लोग उसके आदेशों की प्रतीक्षा में रहेंगे।

ठीक है, अब इस बारे में थोड़ा सोचते हैं। सबसे पहले, इसमें दुःख का एक संकेत है। अगर आप सेवक गीतों से परिचित हैं, तो आपको यशायाह 53 याद होगा।

वह गीत वास्तव में 52 के अंत में शुरू होता है, लेकिन 53 में, वह दुःख भोगता हुआ सेवक है। तीसरे गीत तक पहुँचते-पहुँचते, वह दुःख भोग रहा है, और चौथे गीत में, खासकर यशायाह 53 में, हम उसके दुःख के बारे में विस्तार से पढ़ते हैं। पहले दो गीतों के बारे में क्या? पीड़ा का आयाम उतना स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह मौजूद है, और क्या आपने अध्याय 42, श्लोक 2 में इसे समझा, जब उसने कहा कि वह चिल्लाएगा नहीं, अपनी आवाज नहीं उठाएगा, लेकिन चिल्लाने के लिए यहाँ प्रयुक्त क्रिया, *tza'ak*, इसका सामान्यतः उपयोग तब किया जाता है जब कोई दर्द में चिल्ला रहा हो, और वे पीड़ित हों, और उन पर अत्याचार किया गया हो, और इसलिए यह सेवक उस तरह से नहीं चिल्लाएगा, और कुछ टिप्पणीकारों ने सुझाव दिया है, और मैं उनसे सहमत हूँ, कि यह एक संकेत है कि सेवक का विरोध किया जाएगा, और यह बहुत ही सूक्ष्म तरीके से इस तथ्य का पूर्वाभास देता है कि उसका इस हद तक विरोध किया जाएगा कि उसे क्रूरतापूर्वक और भयानक रूप से पीटा जाएगा और उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाएगा, यहाँ तक कि उसे मार भी दिया जाएगा, और इसलिए मुझे लगता है कि जब आप सेवक के गीतों को दूसरी बार पढ़ेंगे, और आप समझेंगे कि वे कहाँ जा रहे हैं, और आप पहले ही उसकी पीड़ा के बारे में पढ़ चुके हैं, जब आप इसे दूसरी बार पढ़ेंगे, जब आप जानते हैं कि क्या होने वाला है, तो आप इसे पहली बार में चूक सकते हैं, लेकिन यदि आप उस शब्द के प्रयोग को देखें, यह विरोध की ओर संकेत कर रहा है।

पद 4 में लिखा है, "वह पृथ्वी पर न्याय स्थापित करने से पहले न तो मंद होगा और न ही कुचला जाएगा।" वह मंद क्यों होगा? वह क्यों कुचला जाएगा? ऐसा होने का खतरा क्यों होगा? अगर कोई

विरोध है जो उसे उस स्थिति में लाता है जहाँ उसे कष्ट सहना पड़ता है, तो यह भी उसी का एक संकेत हो सकता है, इसलिए हिब्रू में अक्सर ऐसा ही होता है। वे विषयों को बहुत ही सूक्ष्म तरीकों से प्रस्तुत करते हैं, और जैसे-जैसे आप साहित्य में आगे बढ़ते हैं, वे विषय और विकसित होते जाते हैं, लेकिन यहाँ हम जो मुख्य बात देखते हैं, वह यह है कि, हाँ, विरोध के संकेत होने के बावजूद, वह न्याय का एक योद्धा होगा।

वह राष्ट्रों में न्याय लाएगा, और हमारे पास राजसी भजन हैं, जो राजा के बारे में हैं, अक्सर अपने मूल संदर्भ में दाऊद का उल्लेख करते हैं, लेकिन उन्हें अक्सर मसीहाई के रूप में समझा जाता है क्योंकि इन भजनों में राजसी पद का एक आदर्श प्रस्तुत किया गया है, जिस पर ऐतिहासिक राजा पूरी तरह खरे नहीं उतरे, और इसलिए हम समझते हैं कि यह दाऊद का परम पुत्र, मसीहा, बड़े अक्षर M है। दाऊद एक मसीहा था, वह एक अभिषिक्त व्यक्ति था। परम अभिषिक्त व्यक्ति, बड़े अक्षर A, इस आदर्श को पूरा करेगा। जब वह शासन करेगा, तो यह उसके राज्य में वास्तविकता बन जाएगा, और दाऊद के वादे पूरी तरह से साकार होंगे।

तो मैं आपको इनमें से कुछ शाही भजनों पर ले जाऊँगा और कुछ पद पढ़कर आपको दिखाऊँगा कि इन शाही भजनों और इस अंश के बीच एक संबंध है, क्योंकि मैं यह तर्क देने जा रहा हूँ कि पहले और दूसरे सेवक भजनों में आने वाले सेवक को एक राजा के रूप में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। ये राजा प्राचीन निकट पूर्व में न्याय के लिए ज़िम्मेदार थे। तो चलिए भजन 45 पर चलते हैं, जो इन शाही भजनों में से एक है, और मैं इसे अपने कंप्यूटर पर यहाँ दर्ज कर देता हूँ।

मैंने एक बदलाव किया है, और भजन 45, पद 4 में, मैं आपकी महिमा में प्रकट होता हूँ। जो भी भजन लिख रहा है, वह राजा से बात कर रहा है। अपनी महिमा में प्रकट हो और विजयी हो।

न्याय के लिए धर्म के लिए आगे बढ़ो। तब तुम्हारा दाहिना हाथ पराक्रमी कार्य करेगा। और फिर यह राजा को एक पराक्रमी योद्धा के रूप में वर्णित करता है, और मुझे लगता है कि यह राजा को ऐसे संबोधित करता है मानो वह ईश्वर हो।

ऐसा इसलिए नहीं है कि भजनकार राजा को देवता बना रहा है, हालाँकि हम कह सकते हैं कि यह एक तरह से ईश्वर-पुरुष का पूर्वाभास है, लेकिन यहाँ ऐसा नहीं है। यह कविता है, और राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है। वह ईश्वर की इच्छा पूरी कर रहा है।

भजन 18 में परमेश्वर द्वारा राजा को शक्ति प्रदान करने, उसे हथियार चलाना सिखाने, उसे आत्मा प्रदान करने और न्याय स्थापित करने के कार्य को पूरा करने के लिए शक्ति प्रदान करने की बात कही गई है। हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन अटल है। तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है।

तू न्याय से प्रेम करता है और बुराई से घृणा करता है। इसी कारण, तेरा परमेश्वर, राजा को सम्बोधित होते हुए देख रहा है। तेरे परमेश्वर ने तुझे आनन्द के तेल से अभिषेक किया है, और तुझे तेरे साथियों से श्रेष्ठ ठहराया है।

और इसलिए यही राजकीय आदर्श है। प्राचीन इस्राएल में किसी ने भी इस आदर्श को पूरी तरह से पूरा नहीं किया, लेकिन यही वह राजकीय आदर्श है जिसे यीशु पूरा करेंगे। लेकिन यहाँ मुद्दा यह है कि, ध्यान दें कि न्याय स्पष्ट रूप से राजा से कैसे जुड़ा है, क्योंकि न्याय लाने की ज़िम्मेदारी राजा की है।

और हम भजन 72 पर भी जा सकते हैं, जो या तो सुलैमान द्वारा लिखा गया था या उसके लिए, जैसा कि हमें "दाऊद का उत्तराधिकारी" शीर्षक में बताया गया है। हे परमेश्वर, राजा को न्यायपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करें। सुलैमान ने स्वयं इसके लिए प्रार्थना की थी।

राजा के पुत्र को न्याय करने की क्षमता प्रदान करो, तब वह तुम्हारे लोगों का न्याय करेगा और तुम्हारे उत्पीड़ितों का न्यायपूर्वक न्याय करेगा। पहाड़ लोगों के लिए शांति का समाचार लाएँगे, और पहाड़ियाँ न्याय की घोषणा करेंगी। वह उत्पीड़ितों को लोगों से बचाएगा।

वह गरीबों के बच्चों को छुड़ाएगा और अत्याचारियों को कुचल देगा। राजा का यही कर्तव्य है। वैसे, यह केवल इस्राएल तक ही सीमित नहीं है।

आप इसे प्राचीन निकट पूर्व में भी देख सकते हैं। किसी फोनीशियन ग्रंथ में, या प्राचीन निकट पूर्व के किसी उगारिटिक ग्रंथ में, राजा कभी-कभी अपने शासन, अपने शासनकाल को न्याय कहते थे। मानो ये दोनों एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल होने वाले शब्द हों।

इनका मतलब एक जैसा नहीं है, लेकिन इन्हें एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि राजा का शासन आदर्श होता है; राजा के शासन की विशेषता न्याय होती है, इसलिए वह अपने शासनकाल को "मेरा न्याय" कह सकता है। और वे अपने देवताओं को भी रिपोर्ट करेंगे, "अरे, मैंने न्याय स्थापित किया," क्योंकि ईश्वर उनसे यही अपेक्षा करते हैं। खासकर मेसोपोटामिया में, सूर्य देवता शमाश न्याय के लिए ज़िम्मेदार हैं।

क्योंकि वह दीन-दुखियों को, जो सहायता के लिये पुकारते हैं, और दीन-दुखियों को, जिनका कोई रक्षक नहीं, बचाएगा। वह दीन-दुखियों पर दया करेगा। वह दीन-दुखियों के प्राण बचाएगा।

वह उन्हें नुकसान और हिंसा से बचाएगा। वह उनके जीवन को महत्व देगा। इसलिए मुझे उम्मीद है कि मैंने आपको यह विश्वास दिला दिया होगा कि न्याय स्थापित करना एक शाही ज़िम्मेदारी है।

और हम कुछ हद तक दाऊद को भी ऐसा करते हुए देखते हैं। बेशक, दाऊद ने अपने जीवन में ऊरिय्याह के साथ कुछ बहुत ही अन्यायपूर्ण कार्य किए थे। लेकिन 2 शमूएल 8, पद 15 में, इन सब से पहले, दाऊद पूरे इस्राएल पर राज कर रहा था।

उसने अपनी सारी प्रजा के लिए न्याय की गारंटी दी। और इब्रानी पाठ में भी उसके सभी लोगों के लिए न्याय और धार्मिकता की बात कही गई है। इसलिए उस समय, दाऊद न्याय के बारे में बहुत चिंतित था।

याद कीजिए जब अबशालोम ने अपने पिता के खिलाफ बगावत करने का फैसला किया था। अबशालोम को लगता है कि दाऊद ने न्याय नहीं किया, क्योंकि अबशालोम की बहन का बलात्कार उनके सौतेले भाई अम्नोन ने किया था, और दाऊद ने कुछ नहीं किया। वह अम्नोन से नाराज़ तो था, लेकिन उसने असल में कुछ नहीं किया।

और इसलिए अबशालोम ने मामले को अपने हाथ में ले लिया और अपनी बहन तामार की खातिर अपने सौतेले भाई की हत्या कर दी। बाद में, जब उसे निर्वासन से वापस लाया गया, तो दाऊद ने उसे वापस आने की इजाज़त दे दी, और वह इस्राएलियों का पक्ष लेने की कोशिश कर रहा था। और वह शहर के बाहर खड़ा होकर कह रहा था, " अगर मैं राजा होता, तो मैं तुम्हें न्याय दिलाता ।"

तो बात यह है कि जब आप न्याय की स्थापना के बारे में उस पैमाने पर पढ़ते हैं जैसा कि हम इस पहले सेवक गीत में पढ़ रहे हैं, तो मुझे लगता है कि बहुत से लोग यह कहना चाहेंगे कि सेवक सिर्फ़ एक पैगम्बर है। पैगम्बर न्याय के बारे में चिंतित थे, और उन्होंने न्याय को बढ़ावा दिया और उसका समर्थन किया, और उन्होंने राजाओं को न्याय स्थापित करने की चुनौती दी। लेकिन पैगम्बरों ने राष्ट्र को न्यायपूर्ण नहीं बनाया।

उन्होंने इसे बढ़ावा दिया। राजा की ज़िम्मेदारी यही थी। और इसलिए हमारे यहाँ एक राजा है।

नौकर राजा है। अब, वह उससे भी बढ़कर होगा। नौकर कई भूमिकाएँ निभाएगा, और मैं साहित्य में देखता हूँ कि कभी-कभी वे एक भूमिका को दूसरी के विरुद्ध खड़ा कर देते हैं।

नहीं, वह नौकर एक नबी है। नहीं, वह एक राजा है। वह नौकर एक नया मूसा है।

वह एक भविष्यवक्ता है। वह निश्चित रूप से है, और हम इसे अध्याय 49 में देखेंगे, लेकिन इससे बात पूरी नहीं होती। जब हम यशायाह 53 में जाते हैं, तो वह राजा और भविष्यवक्ता, शायद एक छोटा पुजारी भी, दोनों क्यों नहीं हो सकता? तो शायद सबसे महत्वपूर्ण पाठ, क्योंकि यह यशायाह में है, अध्याय 11 में है, जहाँ हमें भविष्य के आदर्श दाऊदवंशी राजा की एक तस्वीर मिलती है, और मैं इसे बस जल्दी से पढ़ने जा रहा हूँ, और मुझे लगता है कि आप देखेंगे कि यह जो भी है, वह पहले सेवक गीत का सेवक भी हो सकता है, और यशायाह की पुस्तक में, मुझे लगता है कि आपको इसी तरह बिंदुओं को जोड़ना चाहिए।

एक अंकुर निकलेगा। जेसी, डेविड का पिता। हमें एक नया डेविड मिलने वाला है।

उसकी जड़ों से एक अंकुर फूटेगा। प्रभु की आत्मा उस पर विश्राम करेगी। पहले सेवक गीत में वर्णित प्रभु की आत्मा उस पर उतरेगी।

एक ऐसी आत्मा जो असाधारण बुद्धि देती है। एक ऐसी आत्मा जो योजनाओं को क्रियान्वित करने की क्षमता प्रदान करती है। एक ऐसी आत्मा जो प्रभु के प्रति पूर्ण निष्ठा उत्पन्न करती है।

वैसे, मैं नेट बाइबल पढ़ रहा हूँ, और मैंने नेट बाइबल इसलिए चुनी क्योंकि जो अनुवाद मैं पढ़ रहा हूँ वह मेरा अपना है, इसलिए मैं अपने अनुवाद से कुछ हद तक संतुष्ट हूँ, लेकिन जैसा कि आप आगे देखेंगे, यह कुछ समय पहले किया गया था, और कुछ जगहों पर मैं इसे अब बदलना चाहूँगा। मैंने कुछ छोटी-छोटी बातों पर अपना रुख बदला है। खैर, चलिए आगे बढ़ते हैं।

वह प्रभु की आज्ञा मानने में आनंदित होगा। वह दिखावे के आधार पर न्याय नहीं करेगा, न ही सुनी-सुनाई बातों के आधार पर निर्णय लेगा। वह गरीबों के साथ न्याय करेगा और पृथ्वी के दलितों के लिए सही निर्णय लेगा।

वह अपने वचन के डंडे से पृथ्वी पर प्रहार करेगा और दुष्टों को मृत्युदंड देने का आदेश देगा। तो लीजिए, एक राजा है जो न्याय स्थापित करेगा। न्याय उसकी कमर में एक पट्टे की तरह बंधा होगा।

ईमानदारी उसकी कमर पर बंधे बेल्ट की तरह होगी, और फिर हम अगले भाग में प्रवेश करेंगे, पद 6 से 8 तक। यहाँ सभी शिकारी उन जानवरों के साथ शांति से रहेंगे जिन्हें वे आमतौर पर मारकर खाते हैं। तो हमने भेड़िये को मेमने के साथ, तेंदुआ और बकरी के बच्चे, बैल और शेर के बच्चे के साथ, और एक छोटे बच्चे को उनकी अगुवाई करते हुए दिखाया है। गाय और भालू साथ-साथ चरने वाले हैं।

उनके बच्चे साथ-साथ लेटेंगे। अगर आप सोच रहे हैं कि शेर क्या खाता होगा, तो बैल की तरह शेर भी भूसा खाएगा। आमूल-चूल परिवर्तन।

और एक बच्चा एक ज़हरीले साँप के साथ खेलने जा रहा है। उसके पास एक पालतू साँप होगा जो, शायद, कभी ज़हरीला और शत्रुतापूर्ण था। और इसलिए वे अब मेरे पूरे शाही पर्वत पर न तो कोई नुकसान पहुँचाएँगे और न ही कोई विनाश करेंगे, क्योंकि प्रभु की संप्रभुता के प्रति सार्वभौमिक समर्पण होगा, ठीक वैसे ही जैसे जल समुद्र को पूरी तरह से ढक लेता है।

और मैं तर्क दूँगा कि जानवरों के साथ जो हो रहा है, वह पशु-साम्राज्य है, पशु-साम्राज्य का परिवर्तन। मैं पहले इसे सिर्फ़ रूपक मानता था। अब नहीं मानता। मुझे लगता है कि यह एक वास्तविक परिवर्तन होगा जो मानव समाज में हो रहे परिवर्तनों को प्रतिबिम्बित करेगा।

राजा न्याय, निष्पक्षता और शांति लाएगा। पतनशील संसार की विशेषता वाला संघर्ष नहीं होगा। और यह पशु जगत में भी प्रतिबिम्बित होगा।

और अब मैं इस दृष्टिकोण को इसलिए अपनाता हूँ क्योंकि अय्यूब 38 और 39 में, प्रभु अय्यूब को पशु जगत से शिक्षा दे रहे हैं, क्योंकि पशु जगत प्रभु और शत्रु के बीच एक बड़े आध्यात्मिक संघर्ष को दर्शाता है, जिसका परिचय पुस्तक में पहले ही दिया जा चुका है। इसलिए, जब मैं यशायाह 42, पद एक से चार पढ़ता हूँ, तो मैं इसे इन अन्य ग्रंथों से, विशेष रूप से यशायाह के भीतर वाले से, जोड़ता हूँ। अगर मैं पूछूँ, तो न्याय कौन स्थापित करेगा? सबसे पहले मैं कहूँगा, वह एक राजा ही होगा।

यह प्राचीन निकट पूर्व है। इसका राजा होना ही चाहिए। और अब यशायाह में, क्या ऐसा कुछ है जिसकी ओर यशायाह इस अंश में इशारा कर रहा है? हाँ, अध्याय 11।

तो वह न्याय का रक्षक होगा, यानी वह राजा होगा। माना कि इस खंड में उसके बारे में बात नहीं की गई है, यह नहीं कहा गया है कि वह राजा है। लेकिन भाषा के अध्ययन से हमने जो सीखा है, और जिसे हम प्रासंगिकता सिद्धांत कहते हैं, वह यह है कि कई बार जब हम बात करते हैं, तो कुछ बातें ऐसी होती हैं जो हमारे बोलने पर निहित होती हैं।

और हमें इनका विशेष रूप से उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। और यही कारण है कि बाइबल पढ़ते समय प्राचीन विश्व की संस्कृति से परिचित होना इतना महत्वपूर्ण है। हम ऐसा पूरी तरह से नहीं कर सकते।

हमारी अपनी सीमाएँ हैं। लेकिन सौभाग्य से, पुरातत्व के माध्यम से, हमारे पास बहुत सारी सामग्री उपलब्ध है जो हमें यह समझने में मदद करती है कि क्या हो रहा है। इसलिए मैं तर्क दूँगा कि अगर कोई पूछे, तो प्रथम सेवक गीत में दाऊद का विशेष रूप से उल्लेख क्यों नहीं है? और यह कैसे नहीं कहा गया है कि वह एक राजा है? मैं कहूँगा कि प्राचीन श्रोताओं को इसकी आवश्यकता नहीं है।

वे अपनी संस्कृति के काम करने के तरीके से ही समझ जाएँगे। और यशायाह ने पहले जो कहा था, उससे भी वे बिंदुओं को जोड़ पाएँगे। इसे कहने की ज़रूरत नहीं है।

और यशायाह सेवक को राजा के रूप में न्याय के सिर्फ एक नायक से कहीं ज़्यादा व्यापक भूमिका में पेश करने जा रहा है। वह एक नया मूसा होगा। वह एक भविष्यवक्ता भी होगा।

इसलिए अगर आप बहुत ज़्यादा विशिष्ट हो जाते हैं, तो आप चित्रण को थोड़ा असंतुलित बना सकते हैं, और आप चित्रण के कुछ अन्य पहलुओं को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं। लेकिन मैं तर्क दूँगा कि वह एक राजा है, और ज़्यादा स्पष्ट रूप से कहें तो, वह दाऊदवंशी राजा है। और इसलिए जब यीशु आता है, तो वह यशायाह 11 और यशायाह 42 को भी पूरा करता है, क्योंकि वह आने वाला आदर्श दाऊदवंशी राजा है।

तो चलिए, इस सेवक गीत को आगे पढ़ते हैं। पद 5 में, सच्चा परमेश्वर, प्रभु, यही कहता है। जिसने आकाश को रचा और उसे फैलाया।

जिसने पृथ्वी और उस पर रहने वाली हर चीज़ को रचा। जिसने इस पर रहने वालों को साँस दी, और जो इस पर रहते हैं उन्हें जीवन दिया। इसलिए प्रभु, अपने निर्वासित लोगों से बात करते हुए, जो प्राचीन निकट पूर्वी भाषा में सोचते हैं, इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि देवता एक स्थान तक सीमित हैं, ऐसा ही कुछ।

प्रभु उन्हें याद दिला रहे हैं, "नहीं, नहीं, मैं तुमसे एकेश्वरवादी होने की अपेक्षा करता हूँ। मैं सच्चा ईश्वर हूँ।" यह लेख वहाँ ईश्वर के लिए प्रयुक्त शब्द, "हाएल", अर्थात् ईश्वर पर रखा गया है।

और मुझे लगता है कि इसे इस मामले में विशिष्ट बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, ताकि वह दूसरों से अलग दिखाई दे। और उसने दुनिया बनाई। उसने धरती को आकार दिया, और वही सभी लोगों को जीवन देता है।

और इसलिए जब हम प्रभु द्वारा अपने सेवक के माध्यम से सभी राष्ट्रों के बीच न्याय स्थापित करने की बात करते हैं, तो उन्हें ऐसा करने का अधिकार है, क्योंकि उन्होंने सभी राष्ट्रों की रचना की है, और उन्होंने संसार की रचना की है, और उन्हें ऐसा करने का अधिकार है, और वह उन्हें इस तथ्य की याद दिला रहे हैं। और फिर वह सेवक से कहते हैं, "मैं, प्रभु, तुम्हें आधिकारिक रूप से नियुक्त करता हूँ। सचमुच, मैं तुम्हें धार्मिकता में बुलाता हूँ, जो मेरे विचार से यह दर्शाता है कि मैं तुम्हें धार्मिकता और न्याय के उद्देश्य से बुलाता हूँ।"

मैं तुम्हारा हाथ थामता हूँ। मैं तुम्हारी रक्षा करता हूँ और तुम्हें, मैंने इसका अनुवाद किया है, लोगों के लिए एक वाचा का मध्यस्थ और राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश बनाता हूँ। सचमुच, यह सिर्फ एक वाचा है।

मैं तुम्हें लोगों के लिए एक वाचा बाँधूँगा। भला, एक व्यक्ति वाचा कैसे हो सकता है? वाचा एक संधि या समझौता है। खैर, हमारे यहाँ रूपक-विशेषण (metonymy) काम करता है, और रूपक-विशेषण (metonymy) में अक्सर कारण-प्रभाव संबंध होते हैं।

और इसलिए यह सेवक एक वाचा की मध्यस्थता करने जा रहा है। वह परमेश्वर और लोगों के बीच काम करेगा, और वह एक वाचा मध्यस्थ होगा। और इसलिए वाचा मध्यस्थ का उल्लेख वाचा के रूप में किया गया है, क्योंकि वाचा मध्यस्थ के रूप में उसके कार्य का परिणाम है।

और यह सिर्फ मेरे लिए ही नहीं है। और भी विद्वान हैं जो इसी तरह तर्क देते हैं। गोल्डन गे ने अपनी हालिया टिप्पणी में इसी तरह तर्क दिया है।

इसलिए मैं तुम्हें लोगों के लिए एक वाचा का मध्यस्थ बनाऊँगा। इसलिए यह सेवक, न्याय स्थापित करते हुए, परमेश्वर और लोगों के बीच एक वाचा का मध्यस्थ बनेगा और राष्ट्रों के लिए एक ज्योति बनेगा। यहाँ ज्योति का प्रयोग उद्धार के रूप में किया गया है।

जब हम अध्याय 49 पर पहुँचते हैं, तो हम वही भाषा इस्तेमाल होते हुए देखेंगे, और यह परमेश्वर के उद्धार और उद्धार से जुड़ी है। अगर आप यशायाह 51:3 और 4 देखें, तो वहाँ प्रकाश उद्धार से जुड़ा है। तो यहाँ बड़ा सवाल यह है कि ये लोग कौन हैं? ये लोग कौन हैं? और मैंने इस पर अपना रुख बदल दिया।

और अगर आप टीकाएँ पढ़ें, तो आप देखेंगे कि वहाँ एक विभाजन है। तो अगर हम इस भजन के तात्कालिक संदर्भ को देखें, तो लोग ओम है, एक नस्ल ओम, लोगों की वाचा, जिसका अर्थ मुझे लगता है लोगों के साथ वाचा, लोगों के लिए मध्यस्थ वाचा, लोगों के साथ वाचा। यह शब्द अभी पद 5 में इस्तेमाल किया गया था, और इसका इस्तेमाल पूरी मानवता के लिए किया गया था।

पहले के पदों में राष्ट्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। हम राष्ट्रों के बीच न्याय स्थापित करेंगे, और प्रभु ही सभी लोगों को प्राण देता है। इसलिए मेरा पहला झुकाव यह कहने का है कि अगर यह पद 6 में दोहराया जाता है, तो यह राष्ट्रों के सभी लोगों पर लागू हो सकता है।

और फिर समानांतर रेखा में, राष्ट्रों के लिए प्रकाश। यह बिल्कुल समानार्थी नहीं है, लेकिन यह मोटे तौर पर समानार्थी ज़रूर हो सकता है। हमारे पास लोग और राष्ट्र हैं।

और अब मेरा भी यही विचार है। मेरा दूसरा दृष्टिकोण यह है कि जब आप इस गीत को अध्याय 49 के संदर्भ में देखते हैं, और अध्याय 49 में लोगों के लिए वाचा के मध्यस्थ के बारे में कई समानताएँ हैं, तो संदर्भ थोड़ा अलग है। वह अभी भी राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश होगा।

संदर्भ थोड़ा अलग है, और यह स्पष्ट रूप से इस्राएल है। यह निर्वासित इस्राएल याकूब है जिसके साथ परमेश्वर अपनी वाचा बाँधने जा रहा है। और जैसा कि आप जानते हैं, यशायाह में अन्यत्र, इस भावी वाचा की बात की गई है, और यह हमेशा इस्राएल के साथ ही है।

यह राष्ट्रों की बात नहीं है। इसलिए दोनों पक्षों के पास अच्छे तर्क हैं, लेकिन मैंने तय किया है कि हम यहाँ जिस बारे में बात कर रहे हैं, वह एक वास्तविक वाचा है जो परमेश्वर मानवजाति के साथ बाँधने जा रहा है। यह सिर्फ इस्राएल से कहीं अधिक व्यापक होगी, और अध्याय 49 में, इस बारे में बात करने के बाद और राष्ट्रों के लिए प्रकाश का जिक्र करते हुए, वह याकूब इस्राएल पर थोड़ा और ध्यान केंद्रित करता है, और कहता है, 'वैसे, मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा को नवीनीकृत करने जा रहा हूँ, वह नई वाचा जो मूसा की वाचा का स्थान लेगी।

तो एक बदलाव है, एक चाल है। इसलिए मैं 49 को 42 पर नहीं थोपने वाला, जबकि मुझे लगता है कि 42 का तात्कालिक संदर्भ ज़्यादा राष्ट्रव्यापी वाचा का पक्षधर है। वह अंधे लोगों की आँखें खोलता है और उन्हें काल कोठरी से, अंधेरे में रहने वालों को जेल से रिहा करता है, और यह भी समझता है कि वह हत्यारों को खुला नहीं छोड़ रहा है वगैरह।

प्राचीन काल में, ऐसे लोगों को शायद कैद नहीं किया जाता था। उन्हें फाँसी दे दी जाती थी। तो हम यहाँ शायद उत्पीड़ित लोगों की बात कर रहे हैं, आप जानते हैं, कर्जदार, ऐसे लोग, उत्पीड़ित लोग जो रिहाई के हकदार हैं क्योंकि उन्हें अनुचित तरीके से कैद किया गया है।

वे अंधे हैं क्योंकि वे इन अंधेरी काल कोठरी में रहे हैं, और, आप जानते हैं, जब आप लंबे समय तक किसी अंधेरी जगह में रहते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे आप अंधे हैं। और इसलिए यह मुक्ति का एक रूपक है जो हम अन्यत्र देखते हैं। और फिर वह निष्कर्ष निकालते हैं, "मैं प्रभु हूँ, यही मेरा नाम है।"

मैं अपनी महिमा किसी और के साथ बाँटूँगा नहीं, न ही मेरी स्तुति मूर्तियों से होगी। देखो, मेरी पूर्व भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी हैं, अर्थात् पूर्व की बातें। अब मैं नई घटनाओं की घोषणा करता हूँ।

और मुझे लगता है कि यशायाह के इस भाग में, शायद एक अपवाद के साथ, जब वह पहले की भविष्यवाणियों की बात करता है, तो वह निर्गमन के बारे में बात कर रहा है। प्रभु ने निर्गमन की

पहले ही घोषणा कर दी थी और फिर उसे पूरा किया। और अब वह आ रहा है, और वास्तव में एक नया निर्गमन उसकी घोषणा का हिस्सा होगा, और वह नई घटनाओं की घोषणा कर रहा है, और वे घटित होने वाली हैं।

उनका एक ट्रैक रिकॉर्ड है। और कभी-कभी इस खंड में दिए गए भाषणों में, वे मूर्तिपूजक देवताओं को चुनौती देते हैं, "तुम्हारा ट्रैक रिकॉर्ड कहाँ है? मुझे कोई सबूत दो कि तुम चीज़ों की घोषणा बहुत पहले कर सकते हो और उन्हें पूरा भी कर सकते हो। उनके घटित होने से पहले ही, मैं तुम्हें बता दूँगा।"

तो इस भाग में प्रभु इस बात को लेकर बहुत चिंतित हैं कि उन्हें उनका उचित हक मिले, और यही वह सेवक के माध्यम से करने जा रहे हैं, जो वास्तव में इस अहसास में योगदान देता है कि वही एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं जो इतिहास को नियंत्रित करते हैं। और मैंने अगले छंदों को शामिल नहीं किया। वे कभी-कभी गीत में शामिल होते हैं।

मैं इन्हें पढ़ूँगा क्योंकि मुझे लगता है कि ये महत्वपूर्ण हैं। प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ। पृथ्वी के क्षितिज से उसकी स्तुति करो।

हे समुद्र में जाने वालों, और उसमें रहने वाले सब लोगों, हे समुद्रतटों और उसके निवासियों, जंगल और उसके नगरों में, और कादर के खानाबदोशों के नगरों में, जयजयकार करो। सेला के निवासी आनन्द से जयजयकार करें। वे पहाड़ों की चोटियों पर से ऊँचे स्वर से जयजयकार करें।

वे यहोवा को वह आदर दें जिसका वह हकदार है। वे समुद्रतटों में उसके कामों की स्तुति करें। देखो, यहाँ राष्ट्रों पर ज़ोर दिया गया है।

यह सभी लोगों पर है। और यह उस बात का उचित उत्तर है जो प्रभु अपने सेवक के माध्यम से उनके लिए करने जा रहे हैं। वह उन्हें न्याय दिलाने जा रहे हैं।

तो सेवक लोगों के लिए एक वाचा का मध्यस्थ है, और मुझे लगता है कि यहाँ पृथ्वी के लोग हैं। अध्याय 49 में इसका संक्षिप्त विवरण दिया जाएगा। वह राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश है जो उन्हें उद्धार प्रदान करेगा।

वह अंधों की आँखें खोलेगा। पुराने नियम में ऐसे और भी अंश हैं जहाँ अंधों की आँखें खोलने का अर्थ है किसी को उचित उपचार देना, उसे मुक्ति दिलाना और उसे मुक्त करना। कई भजनों में इसी बात का जिक्र है।

राष्ट्रों के लिए प्रकाश का यह विचार कुछ मायनों में अनोखा नहीं है। हम इसे मेसोपोटामिया के राजाओं के साथ देखते हैं। यह संस्कृति में शाही छवि है।

उदाहरण के लिए, तिग्लथ-पिलेसर तृतीय को समस्त मानवजाति का प्रकाश, सभी लोगों का प्रकाश कहा जाता था। एसर्हद्दोन संसार का प्रकाश था। असीरियाई राजा स्वयं को इसी प्रकार समझते थे।

वे न्याय के पुरोधा थे, ऐसा उन्होंने सोचा। वे न्याय के पुरोधा थे, और उन्होंने वंचितों की मदद करने की कोशिश की, और इस तरह वे एक प्रकाश थे। बेशक, यह सिर्फ शब्दाडंबर और शाही अतिशयोक्ति हो सकती है, लेकिन यह संस्कृति में मौजूद एक चीज़ है।

अब सवाल यह उठता है कि सेवक राष्ट्रों को कैसे मुक्ति दिलाता है? वह न्याय स्थापित करेगा, और यह निश्चित रूप से राष्ट्रों के उत्पीड़ितों के लिए एक सकारात्मक बात होगी, लेकिन मुझे लगता है कि हमें इसे यशायाह में पहले से बताई गई बातों के प्रकाश में देखना होगा, और इसलिए मैंने इसे इस तरह समझाया है। यशायाह के इस भाग में पहले, भविष्यवक्ता राष्ट्रों को मूर्तिपूजक के रूप में चित्रित करता है। हालाँकि प्रभु परमेश्वर ने सभी मनुष्यों की रचना की है, फिर भी वे उसे वह सम्मान नहीं देते जिसके वह हकदार हैं और जिसकी वह माँग करता है, और यही यहाँ 42 में हो रहा है।

उसने उन सभी को बनाया है, लेकिन वे उसे उनका उचित हक नहीं दे रहे हैं। खैर, एक बार जब वे देखेंगे कि वह सेवक के ज़रिए क्या करता है, तो वे उसे एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में पूजने के लिए तैयार हो जाएँगे। आप जानते हैं, कई मायनों में, यीशु हमें एकमात्र सच्चे परमेश्वर और सच्ची उपासना की ओर वापस ले जाते हैं।

वह हमें सिर्फ नरक से नहीं बचाता। वह वास्तव में अपने लोगों के लिए परमेश्वर के आदर्श को पुनर्स्थापित कर रहा है, और इसलिए सभी राष्ट्र प्रभु के साथ एक वाचाबद्ध संबंध में हैं, चाहे वे इसे जानते हों या नहीं। परमेश्वर ने उत्पत्ति 9 में नूह और उसके पुत्रों के साथ एक वाचा स्थापित की। उसने उन्हें फलदायी होने, पृथ्वी को आबाद करने का आदेश दिया, उन्हें अपने साथी मनुष्यों में निवास करने वाले परमेश्वर की छवि का सम्मान करने की चेतावनी दी, और वादा किया कि वह फिर से सभी जीवन को नष्ट कर देगा, लेकिन जलप्रलय की तरह सभी जीवन को नष्ट नहीं करेगा।

लेकिन पृथ्वी के राष्ट्रों ने मानव रक्तपात से पृथ्वी को प्रदूषित करके, परमेश्वर के साथ इस शाश्वत वाचा, इस बरिटो मेमने को तोड़ दिया है। ये यशायाह 24 और यशायाह 26 हैं। समझे ? तो, इस पहले गीत तक पहुँचने से पहले ही यशायाह में एक वाचा टूट चुकी है।

इस कारण, यशायाह 24 और 26 के अनुसार, राष्ट्रों का विनाश निश्चित है। लेकिन परमेश्वर उन्हें चेतावनी देता है कि वे उद्धार के लिए उसकी ओर मुड़ें। यशायाह 45:22 में ऐसा ही होता है।

प्रभु राष्ट्रों से आह्वान करते हैं कि वे उनकी ओर लौट आएं, न्याय के दिन से पहले उनसे मुक्ति की आशा करें, जब परमेश्वर के सभी शत्रु हारकर उनके सामने झुक जाएँगे। यह अध्याय 45 में है। जो लोग विनम्रतापूर्वक परमेश्वर की दया स्वीकार करते हैं, वे उनके शांति और न्याय के राज्य में भाग लेंगे, और इसका वर्णन यशायाह 2 में किया गया है। राष्ट्र अपनी तलवारों को पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हँसिया बनाएँगे, और शांति स्थापित होगी।

वे यरूशलेम आएँगे और राजा से अपने मतभेदों को सुलझाने के लिए मध्यस्थता करने का अनुरोध करेंगे। वे उसे अपना वाचा का स्वामी, अपना राजा मानेंगे। हम यशायाह 19 में भी इसकी कल्पना देखते हैं, एक ऐसा अंश जो उतना प्रसिद्ध नहीं है, लेकिन यह एक ऐसा पाठ है जहाँ

किसी दिन अश्शूर और मिस्र, जो यहूदा के अनुभव में महाशक्तियाँ हैं, जो शत्रु हैं, आपस में मिल जाएँगे।

एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र तक जाने वाला एक राजमार्ग होगा, और वे परमेश्वर के लोगों, वाचा के लोगों, इस्राएल के साथ, हाथ में हाथ डालकर प्रभु की आराधना करेंगे, और प्रभु कहते हैं, वे सब मेरे लोग होंगे। इसलिए वह उनके साथ एक नए वाचा संबंध की स्थापना करेंगे। जैसा कि पहले सेवक गीत में स्पष्ट है, यह सेवक ही है जो परमेश्वर और मानवजाति के बीच एक नए वाचा संबंध की मध्यस्थता करने और राष्ट्रों के बीच पश्चाताप करने वालों तक उद्धार का प्रकाश पहुँचाने में परमेश्वर का प्रतिनिधि है।

और चौथा सेवक गीत यह समझाएगा कि परमेश्वर ऐसा कैसे कर सकता है, वह पापियों के साथ कैसे मेल-मिलाप कर सकता है, लेकिन हम इसे थोड़ी देर बाद के लिए छोड़ देंगे। तो पहला सेवक गीत यहीं तक पहुँचता है। मैं इसके मसीहाई पहलू के बारे में बात करना चाहता हूँ, लेकिन यहीं एक अच्छा विराम बिंदु है।

और इसलिए मुझे लगता है कि हम अपने अगले व्याख्यान में इस पर चर्चा करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म द्वारा यशायाह के सेवक गीतों पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 1 है, प्रभु का सेवक, न्याय का समर्थक और वाचा का मध्यस्थ, भाग अ, यशायाह 42 :1-9।